वर्ष 27 सप्तम् अंक

फरवरी 2015

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

9 योग्यताओं का सम्पादन है—सफलता का राज़

विशेष स्तम्भ

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान

17 आर्थिक परिदृश्य

20 राष्ट्रीय परिदृश्य

26 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

30 क्रीड़ा जगत्

34 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

35 सारभूत तत्व कोष

38 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

लेख

40 राजनीतिक लेख—योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग

41 परिवहन लेख—भारतीय रेल की प्रथम सेमी हाई स्पीड ट्रेन-गतिमान एक्सप्रेस

42 समसामयिक लेख—भारत को मैन्युफैक्चरिंग हब बनाने की पहल है 'मेक इन इण्डिया'

44 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध लेख—भारत-चीन सीमा विवाद

47 कैरियर लेख—एस.एस.बी.

51 अन्तरिक्ष अभियान लेख—देशी जीपीएस की तरफ बढ़ते कदम

हल प्रश्न-पत्र

आगामी स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के सहयोगी बैंकों में लिपिकीय संवर्ग परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

52 तर्कशक्ति परीक्षा

55 English Language

58 आंकिक क्षमता

61 सामान्य सचेतता

63 कम्प्यूटर ज्ञान

65 रेलवे भर्ती सैल (जयपुर) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

71 रेलवे भर्ती सैल (हाजीपुर) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

78 केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2014

आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक पी.ओ. सम्मिलित लिखित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

104 तर्कशक्ति परीक्षा

109 English Language

113 संख्यात्मक अभियोग्यता

118 सामान्य सचेतता

121 वार्षिक रिपोर्ट 2013-14—खाद्य प्रसंस्करण उद्योग प्रोत्साहन हेतु अनुसंधान, विकास एवं प्रसार कार्यक्रमों की भूमिका-एक दृष्टि में

124 भारत के लोक नृत्य

128 ज्ञान वृद्धि कीजिए

129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

योग्यताओं का सम्पादन है— सफलता का राज़

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

इस जगत् में ऐसा कोई इंसान है ही नहीं, जो योग्य न हो. योग्यता तो सबमें है ही, किन्तु कौन अपनी योग्यता को सम्पादित कर पाता है, योग्यता का उपयोग कर पाता है. मुद्दा यह है कि जो व्यक्ति अपनी योग्यताओं का उपयोग कर पाता है, उन्हें अधिकतम सीमा तक सम्पादित कर पाता है, वही व्यक्ति इस दुनिया में आदर पाता है, पूजनीय बन जाता है और सफल कहलाता है. सफलता की पहचान यही है कि हम अपनी योग्यता का अधिकतम उपयोग कर पा रहे हैं अथवा नहीं. अगर हम नहीं कर पा रहे हैं, तो क्यों न हम आज से ही अपनी योग्यताओं पर भरोसा करें और उनका सम्पादन करना प्रारम्भ करें. अगर गा सकते हो, तो कल पर मत टालो, आज ही गाओ. अगर लिख सकते हो, तो कल पर मत टालो, आज ही लिखना प्रारम्भ कर दो. अगर सेवा कर सकते हो, तो दूसरों के भरोसे मत बैठे रहो, चलो, उठो. आज से ही जहाँ जो व्यक्ति मिला है, जहाँ जैसा माहौल मिला है, उस माहौल में अपने मन, वाणी, कर्म से सेवा में जुट जाओ. अगर आप पढ़ सकते हो, तो आज को क्यों टालते हो ? आज ही पढ़ना प्रारम्भ कर दो, क्योंकि हम इस दुनिया में जितना विलम्ब, देरी कर रहे हैं उतनी ही बहुत सारी सम्भावनाएं खोती जा रही हैं. बदलते समय की रफ्तार में दुनिया बदल चुकी है, बहुत आगे बढ़ चुकी है. सब लोग आगे-से-आगे बढ़ते जा रहे हैं, लेकिन एक आलसी व अनुद्यमी इंसान फिर शिकायत से भरेगा. वह कहेगा, मैं कर सकता था पर लोगों ने मुझे करने का मौका नहीं दिया. मैं कर सकता था पर समय बदल गया. मैं कर सकता था पर अब परिस्थितियाँ वैसी नहीं रहीं, अब मैं नहीं कर पाऊँगा. पछताना उसे ही पड़ेगा, जो आज के दिन में अपनी योग्यताओं का सम्पादन नहीं कर रहा है. अगर आप नहीं कर रहे हो, तो कल दूसरे लोग जब यश प्राप्त कर रहे होंगे, तब तुम उन्हें देखकर सम्भव है जलन से भर जाओ, ईर्ष्या करने लग जाओ. कहने लगो कि सब लोग इन्हीं का इतना आदर क्यों करते हैं. इन्हीं का मान-सम्मान होता है, जबकि ये तो बहुत छोटीसी बात है, मैं भी तो कर सकता था. हाँ, आप कर सकते थे, पर किया क्यों नहीं, क्यों कल पर टाला. ये कल पर टालने की आदत हमें अयोग्य बना रही है. क्यों न हम आज इसी क्षण से अपनी योग्यताओं का सम्पादन करना आरम्भ करें. हम हर हाल में आलस्य छोड़ें. आत्मविश्वास से भरकर अपने आपको अपने कार्य क्षेत्र में जुटाएं. जुटाना जरूरी है. जमाना पल-पल बदल रहा है, विकसित हो रहा है, आगे बढ़ रहा है. हर दिन नई प्रौद्योगिकी आ जाती है और जो लोग इस वर्तमान की प्रौद्योगिकी का सही उपयोग नहीं जान रहे हैं वे कल फिर पछताएंगे.

जीवन में असम्भव कुछ भी नहीं है. अंग्रेजी भाषा के शब्द Impossible में ही I Am Possible छुपा है. प्रत्येक रात्रि के बाद सवेरा अवश्य होता है. कठिनाइयों एवं असफलताओं के बाद ही सफलता आती है.

"Every Cloud has a Silver Lining."

घनघोर काली घटा के पीछे ही बिजली चमकती है. प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सब कुछ सीधा सपाट नहीं होता. बाधाएं आना स्वाभाविक है. इन्हें पार करना श्रेष्ठ मानवों का स्वभाव. असगर गांडवी का कथन है—

''चला जाता हूँ हँसता खेलता मौज-ए-हवादिस से,
अगर आसानियाँ हों, जिन्दगी दुश्वार हो जाए.''

जो लोग नदी के भँवर को हँसते-खेलते पार कर लेते हैं, उनके लिए कठिनाइयों से लड़ना आसान हो जाता है.

●●●